निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।। ४१ ।।

आपके हुक्म से ही जागृत बुद्धि आएगी, तब यह मोह सागर छूटेगा। यहां आत्मा अन्धेरे में पड़ी हुई है। वह बिना जागृत बुद्धि के नहीं जाग सकती।

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन।। ४२ ।।

हे धनी! आपने जो प्रश्न पूछा उसके उत्तर में मैंने ब्रह्माण्ड की हकीकत बताई है, अभी बहुत कुछ कहना है, वह भी सुनो।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ७७ ॥

सनन्ध खोज की

पिया मैं विध विध तोको ढूंढ़िया, छोड़ धंधा सब और।
पूछत फिरों सोहागनी, कोई बतावे पिया ठौर।। १ ।।

हे धनी! मैंने संसार का सब काम-धन्धा छोड़कर आपको तरह-तरह से खोजा। सखियों से (हरदासजी से भोजनगर में) पूछती फिरी कि कोई प्रीतम का ठिकाना बताए।

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल।
कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल।। २ ।।

मैं इसकी भी थोड़ी-सी बात बताती हूं। मैंने तुम्हारे लिए ही इस खेल में बहुत खोज की, परन्तु मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जो आपकी पहचान कराए।

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबनकी मत।
जोलों साहेब न पाइए, तोलों कीजे कासों हेत।। ३ ।।

मैंने शास्त्रों, साधुओं तथा उनके धर्मों और उनकी गवाही वाले ग्रन्थों को देखा, परन्तु जब तक धनी की सुध न मिले तब तक किससे लगाव रखें।

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार।। ४ ।।

इस संसार में छोटे या बड़े जिसने भी परमात्मा को खोजा, किसी को भी परमात्मा नहीं मिला। उनके संशय नहीं मिटे और माया भी नहीं छूटी।

ए झूठा छल कठन, कांहूं न किसी की गम।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम।। ५ ।।

यह बड़ा ही झूठा छल का खेल है। इसमें किसी की कहीं भी पहुंच नहीं है। यहां कोई नहीं बताता कि हमारा घर कहां है? प्रीतम कहां है? जमीन कौनसी है और हम कौन हैं?

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत।
इनमें सीधा दौड़ के, कोई ना निकस्या जीत।। ६ ।।

यह सारा संसार छल का ही रूप है। छल की तो चाल ही उलटी होती है। उसमें सीधा ज्ञान लेकर माया को जीतकर कोई नहीं निकला।

Nijanand App

मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए।
इस मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए।।७।।

मैंने दिल से विचार कर और चित्त में मनन कर देखा कि इस ब्रह्माण्ड से कोई भी अपने जीव को जागृत करके नहीं जा सका।

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार।
तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक सिर मार।।८।।

बहुतों ने मेहनत की, रात-दिन खोज की, विचार किया। वह भी हाथ पटक कर रह गए और उनसे भी यह छल नहीं छूटा।

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट।
तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं न देख्या दृष्ट।।९।।

यह संसार मोह तत्व से बना है। मोह तत्व से जितनी सृष्टियां बनीं उन सभी ने साफ कहा है कि हमें परमात्मा नहीं मिला।

वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम।
एता दृढ़ किने न किया, कहां खसम कौन हम।।१०।।

मनुष्य तन की जितनी जातियां हैं उन सब में मैंने खोजा, किन्तु किसी ने दृढ़ता से नहीं कहा कि प्रीतम कहां है और हम कौन हैं?

आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध।
केवल विदेही होए गए, तिन भी न कही ए सुध।।११।।

शुरू से, बीच में और आज तक सब इसी प्रकार बोलते रहे हैं। केवल एक राजा जनक विदेही हो गए हैं उनको भी सुध नहीं हुई।

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक।
बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक।।१२।।

वेदों ने भी बार-बार यह कहा कि चौदह लोक झूठे हैं। उन्होंने भी यह कहा कि परब्रह्म के सिवाय और सब खोखला है।

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहां लों पोहोंचे मन।
ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन।।१३।।

बुद्धि, चित्त, दृष्टि, कान, मन और वचन जहां तक जाते हैं, वहां तक सब पैदा होते हैं और मर जाते हैं।

वेदांती भी केहे थके, द्वैत खोजी पर पर।
अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर।।१४।।

वेदान्ती भी यह कहकर थक गए कि हमने माया को खूब खोजा। हारकर उन्होंने कहा कि हमारा सिर कट जाए पर हम अद्वैत के बारे में कुछ नहीं जानते।

Nijanand App

मन चित्त बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए।
खट प्रमान ते रहित है, सो दृढ़ कैसे होए।। १५ ।।

मन, चित्त, बुद्धि, कान, नजर और शब्द उस परब्रह्म को नहीं पहुंचते जो छः प्रमाण से रहित है। उसके लिए निश्चित रूप से कैसे बताएं?

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतै को विस्तार।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार।। १६ ।।

परब्रह्म के आड़े माया का परदा लगा है और सब जगह माया ही माया है। उस माया को छोड़कर आगे की सुध किसी ने निश्चित रूप से नहीं दी।

ए अलख किने न लखी, आदै थें अवल।
ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल।। १७ ।।

यह माया जिसको आज दिन तक किसी ने नहीं पहचाना ऐसी कमबख्त (चाण्डालिनी) है कि न तो इसका रूप है और न ही यह आंखों से दिखती है। यह सारे संसार में शुरू से ही व्यापक है।

चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर आवे जाए।
जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए।। १८ ।।

निराकार चेतन ही जीव रूप में शरीर धारण करता है और जड़ शरीर को चेतन करता है। इसके निकलने पर उसे (शरीर को) जड़ बना देता है। इस तरह से माया का चक्कर चलता रहता है।

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह।
छोड़ याको कोई न कहे, ठौर खसम का जेह।। १९ ।।

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर दसों दिशाओं में इसी माया का विस्तार है। इसका ज्ञान सबके पास है, पर परब्रह्म का पता बताने वाला कोई नहीं है।

जो कछू कहिए वचने, सो सब मिने गफलत।
ना सरूप ना काहू वतन, तो क्यों कर जाइए तित।। २० ।।

वचनों से जो कुछ भी कहते हैं वह वचन सारे इसी माया के हैं। इसमें अखण्ड स्वरूप की और अखण्ड घर की पहचान बताने वाला कोई नहीं है, तो वहां कैसे जाया जाए?

पेड़ काली किन ना देखी, सब छायाही में रहे उरझाए।
गम छायाकी भी ना पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए।। २१ ।।

इस माया रूपी काले पेड़ को किसी ने नहीं देखा। सब इसी की छाया में उलझे पड़े हैं। दुनियां वालों को इस छाया की भी पहचान नहीं हुई तो इस माया रूपी पेड़ (ब्रह्माण्ड) के पार कैसे देख सकते हैं?

जाए ना उलंघी देखीती, ना कछु होए पेहेचान।
तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक ना सुन्यो निसान।। २२ ।।

इसको देखते हुए भी कोई इसको उलंघ (पार) नहीं सकता। इसके अन्दर रहकर भी इसकी कोई पहचान नहीं होती, तो उस परब्रह्म प्रीतम को कैसे पाया जाए जिसका नाम-निशान भी नहीं सुना।

Nijanand App

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत।
किने ना कह्यो ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत।। २३ ।।

हमारे धनी माया से अलग हैं और सब जगह पर माया का ही विस्तार है। उस अखण्ड घर की कोई नहीं कहता कि उसे किस तरीके से पाया जाए?

या विध ग्यान जो चरचहीं, सो मैं देख्या चित ल्याए।
ज्यों मनुआं सुपने मिने, बेसुध गोते खाए।। २४ ।।

श्यामाजी कहती हैं कि मैंने ध्यान से देखा कि यहां का ज्ञान सुनाने वाले माया के अन्दर का ही ज्ञान देते हैं। जैसे मन सपने में भटकता है, इसी तरह से यह ज्ञानी लोग बेसुधी में गोते खाते हैं।

खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिनमें बंझा पूत।
मदमाते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप।। २५ ।।

यह ज्ञानी क्षण-क्षण में अपने विचार बदलते हैं। कभी कहते हैं कि ब्रह्म घट-घट व्यापी है। कभी कहते हैं कि यह बांझ के पूत (पुत्र) की तरह है। झूठ बोलते हैं। जैसे शराबी बन्दर अनेक रूप लेकर गुलाटियां भरता है उसी तरह यह ज्ञानी लोग करते हैं।

खिनमें कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए।
यों संग संसा दृढ़ हुआ, सो धोखे रहे फिराए।। २६ ।।

एक क्षण में सत बतलाते हैं और दूसरे क्षण कहते हैं यह झूठ है। माया कुछ नहीं है। ऐसों की संगति से संशय और बढ़ गया। इस तरह से सबको धोखे में घुमा रहे हैं।

खिनमें कहे है आप में, खिनमें कहे बाहेर।
खिनमें मांहें न बाहेर, यों सब्द न कोई निरधार।। २७ ।।

एक क्षण में कहते हैं कि परमात्मा मेरे अन्दर है। उसी क्षण कहते हैं कि सबके अन्दर है। फिर दूसरे क्षण कहते हैं कि वह न अन्दर है और न बाहर है। इस तरह से उनकी कोई भी बात स्थिर नहीं है।

खिनमें कछू और कहे, खिनमें और की और।
सो बात दृढ़ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रेहेवे ठौर।। २८ ।।

एक पल में कुछ कहते हैं, दूसरे में कुछ और का भी और कहते हैं, इसलिए जिनकी वाणी ही स्थिर नहीं है, उनसे परमात्मा की पहचान कैसे हो सकती है?

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए।
ऐसे साधू सास्त्रमें, दृढ़ न सब्दा कोए।। २९ ।।

जैसे एक बावरा बालक रोते-रोते लालच के मारे हंसने लगता है, वैसे ही लोभी ज्ञानी साधु शास्त्रों में दृढ़ता से वचन नहीं बोलते।

ए सबे सींग ससक, बंझा पूत वैराट।
फूल गगन नाम धराए के, उड़ाए देवे सब ठाट।। ३० ।।

यह सभी खरगोश (शशक, ससला) के सींग, बांझ के पूत तथा आकाश के फूल के नाम लेकर ऐसे ऐसे शब्दों से जो कि सभी झूठे हैं, कहकर सत का रूप ही बिगाड देते हैं।

Nijanand App

आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान।
देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान।। ३१ ।।

वह अपने ज्ञान के अहंकार में अपने आप को झूठी उपाधियां देकर आकाश के फूल की तरह वर्णन करते हैं। अपने आप को मिटा रहे हैं। हाय-हाय ऐसी इस चतुर माया ने देखते-देखते सबको ठग लिया है।

कोई न परखे छल को, जिन छलमें हैं आप।
तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात।। ३२ ।।

जिस माया के छल में बैठे हैं, उस माया के छल को कोई नहीं पहचान पाते, तो वह परब्रह्म जो माया से अलग है, उसे किस तरह से प्राप्त कर सकते हैं?

अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर।
ए खोजें सब द्वैत में, ओतो अद्वैत लों अंधेर।। ३३ ।।

सारे ज्ञानी लोग यहीं अटक गए हैं। आगे जाने के रास्ते का उनके पास शब्द ही नहीं है। वह सब इसी माया में खोज कर रहे हैं, जिस माया का अन्धकार बेहद की सीमा के पहले तक फैला हुआ है।

ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान।
सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान।। ३४ ।।

वेद, वेदान्त तथा शास्त्रों का ऐसा ही ज्ञान है जिसे साधु लेकर घूमते हैं, किन्तु मोह तत्व के आगे नहीं जा सकते।

ए खेल सारा कुदरती, फिराया फिरस्तों फेर।
ऐ इंड गोलक बीच में, गिरद गफलत की अंधेर।। ३५ ।।

यह सारा खेल माया का है, उसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश के मन को भी माया में घुमा रखा है। ऐसे ब्रह्माण्ड के चारों तरफ मोह तत्व का ही अन्धेरा है।

कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर।
या विध चौदे तबकों, कह्या फिरस्ते का मन फेर।। ३६ ।।

प्रकृति को माया कहते हैं। संशय को मोह तत्व अर्थात् अन्धेरा कहते हैं। इस तरह से चौदह लोकों में फरिश्ते (अजाजील) भगवान विष्णु का मन (नारद-अवलीस) सबके अन्दर बैठा है।

ए खेल सारा सुन्य का, फिरे मने मन फेर।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर।। ३७ ।।

यह खेल सारा निराकार का है, जिसमें हर इन्सान के मन में (भगवान विष्णु का मन) नारद बैठकर घुमा रहा है (फिरा रहा है)। चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड को बीच में लेकर मोह तत्व ने चारों तरफ से घेर रखा है।

सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा ना निकस्या पार।
खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार।। ३८ ।।

यहां की सब वाणी मोह तत्व तक की है (बयान करती है)। इसका एक शब्द भी आगे नहीं जाता। उस परब्रह्म को इसी में खोजते-खोजते अन्धकार में डूब जाते हैं।

Nijanand App

केतेक बुजरक कहावहीं, सो याही सुन्य को चाहें।
सो गले सब इतहीं, आगे ना निकसे पाए।। ३९ ।।

यहां के कुछ ज्ञानी जन जो अपने आप को बड़े कहलाते हैं, वह निराकार की ही चाहना करते हैं। वह सब इसी निराकार में डूबते हैं और आगे नहीं निकल पाते।

फिरे जहां थें नारायन, नाम धराया निगम।
सुन्य पार ना ले सके, हटके कह्या अगम।। ४० ।।

नारायण भगवान ने भी बहुत खोज की, किन्तु वह भी शून्य के पार नहीं जा सके। तब नारायण ने परब्रह्म को 'निगम' (जिसका गम नहीं है—जहां पहुंचा नहीं जा सकता) कहा, वह फिर शून्य से वापस लौटे और कहा कि उस परब्रह्म की खबर मुझे नहीं है।

सुन्य की बिध केती कहूं, ए इंड जाके आधार।
नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार।। ४१ ।।

शून्य की हकीकत कहां तक कहूं? यह सारा ब्रह्माण्ड उसी में लटक रहा है। खोज करने वालों ने 'यहां नहीं है', 'यहां नहीं है' कहकर परमात्मा को निगम कहा। किसी तरह से वहां पहुंचा नहीं जा सकता, इस बात को स्वीकार किया।

अब नेक तो भी कहूं, सुन्य मंडल की सुध।
जाको कोई ना उलंघे, अगम अगाध या बिध।। ४२ ।।

अब थोड़ी-सी शून्य मण्डल (निराकार) की हकीकत कहती हूं। जिसको कोई नहीं उलंघ सका, इसलिए इसे अगम, अगाध कहा, अर्थात् इसकी खबर नहीं है, ऐसा कहा।

इत नहीं तत्व गुन निरगुन, पख नहीं परमान।
अंग ना इंद्री जान ना आवन, लख नहीं निरमान।। ४३ ।।

इस शून्य मण्डल में न कोई तत्व है, न कोई गुण है और न कोई पक्ष (चार अन्तस्करण) है, न अंग है, न इन्द्रियां हैं, न आना-जाना है और न इसके निर्माण का ही पता है।

इत आद अंत ना थिर चर, नर ना कोई नार।
अंधेर ना कछू उजाला, ना निराकार आकार।। ४४ ।।

इस शून्य मण्डल का न कोई आदि है न अन्त है। यह भी पता नहीं चलता कि यह चल है या अचल, यह स्त्री है या पुरुष, अन्धेरा है या उजाला, इसका आकार है या बिना आकार के है।

जिमी जल ना वाए अगनी, ना सब्द सोहं आसमान।
ना कछू जोति रूप रंग, नहीं नाम ठाम कोई बान।। ४५ ।।

यहां जमीन, जल, हवा, अग्नि तथा आसमान, आदि कुछ भी नहीं हैं। यहां पर न रूप है, न रंग है, न रोशनी है, न कोई बोली है और न किसी नाम का पता है।

ना जीव करम ना काल कोई, गंध नहीं बल ग्यान।
तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावें सदा प्रवान।। ४६ ।।

न कोई यहां जीव है, न कोई कर्म है, न कोई मौत है, न कोई सुगन्ध है और न यहां कोई ज्ञान ही है। हमेशा सत कहलाने वाले तीर्थंकर भी यहां आकर नष्ट हो जाते हैं।

Nijanand App

बीज बिरिख ना कमल फल, भंग ना कछू अभंग।
मोहादिक एही सुन्य, बीच सरूप या संग।।४७।।

यहां पर न बीज है, न वृक्ष है, न फूल है, न फल है। यहां न कुछ नाश होता है और न कुछ अखण्ड है। इसी को मोह तत्व कहते हैं। इसी को शून्य कहते हैं। इस शून्य मण्डल के अन्दर माया के संग से नारायण ने संसार बनाया।

तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़ै नींद निदान।
नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों कर करे पेहेचान।।४८।।

यह चौदह लोकों की दुनियां स्वप्न की है। इसका मूल नींद है। इस नींद के पार जो प्रीतम है, उसकी नींद में रहकर पहचान कैसे कर सकते हैं?

ए ख्वाबी दम सब नींद लो, दम नींदै के आधार।
जो कदी आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार।।४९।।

यहां के सभी जीव सपने के ही हैं। सपने तक ही इनकी पहुंच है। यदि कोई आगे जाने की कोशिश करता भी है तो वह निराकार में ही गल जाता है।

जिनहूं जैसा खोजिया, सब बोले बुध माफक।
मैं देखे सबद सबन के, सो गए जाहेर मुख बक।।५०।।

जिसने जितना खोजा, अपनी बुद्धि के अनुसार वह उतना ही बोले। मैंने सबकी वाणी को देखा और अनुभव किया कि यह सब व्यर्थ कह रहे हैं।

ए पुकार खोजी सुनके, हट रहे पीछे पाए।
पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उरझाए।।५१।।

इनकी ऐसी अनिश्चित वाणी को सुनकर दूसरे खोज करने वाले भी पीछे हट गए। किसी को भी निराकार के आगे की खबर नहीं मिली। सब इसी निराकार शून्य में उलझे रह गए।

यामें जो बुजरक हुए, सो सीतल भए इन भांत।
ना सुध छल ना पार की, यों गले सुन्य ले स्वांत।।५२।।

इस ब्रह्माण्ड में जो बड़े ज्ञानी हुए वह इसी तरह हताश (निराश) हो गए। उन्हें न माया की खबर पड़ी और न आगे की। इस तरह से निराश होकर शून्य में गल गए।

या बिध तो भई नास्त, सो नास्त जानो जिन।
सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन।।५३।।

इस तरह से सभी ने अपनी वाणी में कहा कि वह नहीं है। अब श्यामाजी कहती हैं कि यहां के लोग उसे नहीं पा सके तो यह नहीं समझना कि परब्रह्म नहीं है। इनकी वाणी में से सार शब्द को खोजकर, 'परब्रह्म है' ऐसा मैंने मन में दृढ़ किया।

जिन जानो पाया नहीं, है पावन हार प्रवान।
सो छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान।।५४।।

ऐ दुनियां वालो! ऐसा न समझना कि कोई परब्रह्म को पाने वाला नहीं है। परब्रह्म के पाने वाले तो हैं, परन्तु वह इस छल में छिपे हैं। उनका किसी से ताल-मेल नहीं है (विचारधारा नहीं मिलती)।

Nijanand App

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ।
खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ।।५५ ।।

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी (आशिक) संसार में छिपे हैं। उनके लिए संसार नाचीज हो गया है। वह केवल प्रियतम के प्रेम में रंगे हैं और दुनियां का सब कुछ भूल गए हैं।

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास।
प्रेमै में मगन भए, ताए होए गयो सब नास।।५६ ।।

इनकी सुरता माया में नहीं है। इनका ध्यान अखण्ड घर की तरफ उजाले में है। यह पिया के प्रेम में मस्त हैं। इनके लिए दुनियां मर गई है।

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए।
सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए।।५७ ।।

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी निश्चित रूप से छिपे हैं और वह दुनियां की कोई बात करते ही नहीं हैं और यदि वह कुछ पार के शब्द कहते भी हैं तो यहां के ज्ञानियों की समझ में नहीं आता।

सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल।
या विध कोई न समझे, बात पड़ी है बल।।५८ ।।

उनके शब्द सीधे परमात्मा के प्रेम को बतलाते हैं। शास्त्र तो चतुराई और छल से भरे पड़े हैं। इस तरह से उनकी बात के रहस्य (मर्म) को कोई समझ नहीं पाता।

ए जो साधू सास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार।
पर गुझ किनहूं न पाइया, सोई सबद हैं पार।।५९ ।।

संसार के साधु और शास्त्र जो बोलते हैं सारा संसार उनको सुनता है, परन्तु परब्रह्म के रहस्य का जो भेद छिपा है, उसे किसी ने नहीं पाया। वही पार के शब्द हैं।

देखे सारे सास्त्र, सो तो गोरख धंध।
मूल कड़ी पाए बिना, देखीते ही अंध।।६० ।।

मैंने सारे शास्त्रों को देखा कि यह तो गोरखधन्धा है। इसकी मूल कड़ी जब तक नहीं मिल जाती, तब तक देखते हुए भी अन्धे की तरह भटकना पड़ता है।

ऐसा तो कोई ना मिल्या, जो दोनों पार प्रकास।
मगन पिया के प्रेम में, भी स्यानप ग्यान उजास।।६१ ।।

मुझे तो ऐसा कोई नहीं मिला जो हद और बेहद दोनों के ज्ञान में प्रवीण हो, प्रीतम के प्रेम में भी मग्न हो और शास्त्रों के ज्ञान में भी सतर्क हो (होशियार हो)।

जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध।
माएने गुझ बताए के, कहे वतन की बिध।।६२ ।।

यदि कोई ऐसा मिले तो वही सब पहचान करवा सकता है। वही गुझ (गुह्य) मायने खोलकर घर की हकीकत कह सकता है।

Nijanand App

सबद सारे वैराट के, बोलत अगम अगम।
कोई न कहे रसूल बिना, जो खुद पें आए हम।।६३ ।।

इन चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के सारे ज्ञानियों के ज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वह सब अगम बताते हैं, रसूल साहब के बिना किसी ने नहीं कहा कि मैं खुदा से मिलकर आया हूं।

ए नबिएँ जाहेर कह्या, मैं पार से आया रसूल।
खुद की सुध सब ल्याइया, निद्रा न मेरा मूल।।६४ ।।

मुहम्मद साहब ने स्पष्ट कहा कि मैं पार से खुदा का पैगाम लेकर आया हूं। मैं अपने आप की खबर रखता हूं और यह जानता हूं कि यह माया मेरा मूल घर नहीं है।

मैं कारज खसम के, ले आया फुरमान।
आखिर इमाम आवसी, तब मैं भी संग सुभान।।६५ ।।

मैं अपने खसम (स्वामी) के कार्य के लिए यह फरमान लेकर आया हूं। आखिरत में परब्रह्म अल्लाह तआला खुद इमाम मेंहदी बनकर आएंगे तब मैं भी उनके साथ आऊंगा।

मैं आया हुकम हाकिम का, पर आवेगा हाकिम।
करसी कजा सबन की, तब संग आखिर हम।।६६ ।।

मैं हाकिम (परब्रह्म) का हुक्म लेकर आया हूं। आगे हाकिम (परब्रह्म) स्वयं आएंगे। वह सबका फैसला करेंगे तब उनके साथ मैं भी रहूंगा।

ए फुरमान तब बांचसी, इमाम आवसी जब।
लिखिया जो इसारतें, सब जाहेर होसी तब।।६७ ।।

इस फरमान (कुरान) के भेद तभी खुलेंगे जब इमाम मेंहदी आएंगे। कुरान में जो बातें इशारों में लिखी हैं, वह उस समय खुद इमाम मेंहदी जाहिर करेंगे।

काजी कजा कर के, देसी परदा उड़ाए।
परदा उड़े सब उड़सी, लेसी कयामत उठाए।।६८ ।।

काजी खुदा (परब्रह्म) सबका इन्साफ करके ब्रह्माण्ड का प्रलय कर देंगे और प्रलय के बाद सबको आठ बहिश्तों में अखण्ड कर देंगे।

खसम सुध सब देवही, गुझ बतावे कुरान।
बातें कहे वतन की, पैगंमर प्रवान।।६९ ।।

खुद खसम (परब्रह्म) आकर के कुरान की छिपी बातों को स्वयं बताएंगे। वह घर की बातें करेंगे और रसूल साहब की वाणी प्रमाणित करेंगे (पुष्टि करेंगे)।

ए सबद तो जाहेर कहे, पर आया न किनो आकीन।
तो लगे सब छल को, हिंदू या मुसलमीन।।७० ।।

इस यथार्थ के ज्ञान की बातों पर किसी को यकीन नहीं आया और इसीलिए हिन्दू या मुसलमान सब माया को पकड़कर बैठे हैं।

Nijanand App

ए सबद मैं दृढ़ किए, पिया ना करें निरास।
रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहेसों विलास।।७१ ।।

इन शब्दों से मैंने निश्चय कर लिया है कि अब मेरे प्रीतम मुझे निराश नहीं करेंगे। मेरी आत्मा भी कहती है कि तुझे दूल्हा मिलेंगे।

नबी सबद मोहे मद चढ़्यो, बढ़्यो बल महामत।
अब एक खिन ना रहे सकूं, उड़ गई कहुंए स्वांत।।७२ ।।

रसूल के इन शब्दों को सुनकर श्री महामतिजी कहती हैं कि वह अलमस्त हो गईं। मेरी आत्मा धनी मिलने के लिए अशान्त हो गई (तड़पने लगी)।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १४९ ।।

सनन्ध विरह तामस की

नोट : प्यारे सुन्दरसाथजी! यह तामस का विरह तब हुआ, जब दिल्ली में गोवर्धनदास और लालदास के बीच कुरान सुनने के बाद विचारों में अन्तर आ गया। लालदासजी ने स्वामीजी से कहा कि हमारा यकीन तो चटाई तक है। तब श्रीजी को सारा वृतान्त सुनने पर जोश आया और सब जागनी का काम छोड़कर सबको अलग-अलग भेज दिया। स्वयं अनूपशहर को चले तो रास्ते में स्वास्थ्य अधिक खराब होने पर सनन्ध ग्रन्थ उतरा। उस समय यह विरहा तामस में हुआ, उसे लिखा है।

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,
अजू आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर।
दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर।। १ ।।

स्वामीजी तामस में हैं और अपने आप से विचार कर रहे हैं कि जागनी के काम में सुन्दरसाथ के असहयोग से मुझे निराशावादी नहीं होना चाहिए। मैं इस तरह से शान्ति नहीं चाहता। मेरे तन के सभी अंग चलते हैं और निराशा की हालत में आंखों से आंसू भी नहीं आ रहे हैं। धनी के दर्द से मेरा शरीर पीला हो गया है, लस्त हो गया है, धूल के समान मिट्टी हो गया है। अब मुझे मिट जाने वाले तन से कैसे धैर्य हो?

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरों किने न अगमाए।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए।। २ ।।

धनी के प्रेम का रास्ता बड़ा कठिन है। इसमें कई कर्म काण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञान काण्ड के टेढ़े रास्ते हैं, जिन पर बड़े-बड़े शूरवीर चलने वाले भी इस प्रेम मार्ग पर नहीं चल सकते। यह रास्ता तलवार की धार पर चलने के समान है। इस रास्ते में सामने से गुण, अंग, इन्द्रियों के भाले छेदते हैं, इसलिए हे मेरी आत्मा! तुम धैर्य और साहस का शृंगार करके चलो।

सागर नीर खारे लेहेरें मार मारे फिरे, बेटों बीच बेसुध पछाड़ खावे।
खेले मच्छ मिले गले ले उछाले, संधो संध बंधे अन्धों योंज भावे।। ३ ।।

इस सारे भवसागर में माया की लहरें थपेड़े मारती हैं। इससे यह जीव छोटे-छोटे टापुओं से टकरा कर बेसुध हो जाता है, अर्थात् कमजोर दिल वाले साथियों के असहयोग से निराशा होती है। इस भवसागर में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं, जो एक-दूसरे को निगल रहे हैं। बड़े-बड़े गादीपति (गद्दी धारी), महन्त, धर्माचार्य

Nijanand App